



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 93] नई दिल्ली, सोमवार, फरवरी 16, 2015/माघ 27, 1936

No. 93] NEW DELHI, MONDAY, FEBRUARY 16, 2015/MAGHA 27, 1936

पोत परिवहन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 फरवरी, 2014

सा.का.नि. 97(अ).—केन्द्रीय सरकार, वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 435-भ के साथ पठित धारा 285 की उप-धारा (1), धारा 288 की उप-धारा (1) और उप-धारा (2), धारा 289, धारा 296 की उप-धारा (1) और उप-धारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह समाधान हो जाने पर कि उक्त अधिनियम के भाग-15क (मत्स्य नौकाएं) के अधीन बनाए गए वाणिज्यिक पोत परिवहन (भारतीय मत्स्य नौका निरीक्षण) नियम, 1988 की अपेक्षाओं का अनुपालन करना असाधनीय है, उनके रजिस्ट्री प्रमाण-पत्र में यथा अभिलेखबद्ध निम्नलिखित विनिर्देशों वाली भारतीय मत्स्य नौकाओं को, वाणिज्यिक पोत परिवहन (भारतीय मत्स्य नौका निरीक्षण) नियम, 1988 की अपेक्षाओं से, नौकाओं के विनिर्देशों के साथ नीचे वर्णित तारीखों से छूट प्रदान करती है, अर्थात् :—

(i) 24 मीटर से कम वाली भारतीय मत्स्य नौकाओं, इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से

(ii) 20 मीटर से कम वाली भारतीय मत्स्य नौकाओं, 13 जनवरी 2014 से इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख तक ।

2. पैरा 1 के अधीन प्राप्त छूट, इस शर्त के अध्वधीन होगी कि ऐसी मत्स्य नौकाएं, निम्नलिखित नियमों और विनियमों में विहित उपस्कर ले जाएंगी और उनका दक्ष अनुरक्षण हो :—

(क) वाणिज्यिक पोत परिवहन (अग्निशमन उपयंत्र) नियम, 1990;

(ख) वाणिज्यिक पोत परिवहन (समुद्र के टकराव रोकना) विनियम, 1975; और

(ग) वाणिज्यिक पोत परिवहन (जीवन रक्षक उपयंत्र) नियम, 1982 या वाणिज्यिक पोत परिवहन (जीवन रक्षक उपयंत्र) नियम, 1991 ।

[फा. सं. एसआर-11013/3/92-एमए (एमजी)-भाग-2]

दिव्या प्रसाद, संयुक्त सचिव

स्पष्टीकरण ज्ञापन :— केन्द्रीय सरकार, ने अधिसूचना सं. सा.का.नि. 9(अ), तारीख 13 जनवरी, 2012 द्वारा 20 मीटर से कम की मत्स्य नौकाओं को, वाणिज्यिक पोत परिवहन (भारतीय मत्स्य नौका निरीक्षण) नियम, 1988 की अपेक्षाओं से दो वर्ष की अवधि के लिए छूट दी थी और वह छूट 12 जनवरी, 2014 को व्यपगत हो गई है । इस अधिसूचना के खंड (ii) के अधीन, उस सीमा तक भूतलक्षी प्रभाव देने से कोई भी व्यक्ति प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं होगा ।